jewan yatra1:arunjaity.qxd 9/26/2010 10:24 PM Page 36

चित्रकूट में समाज शिल्पी दंपति परिवारों के साथ नानाजी

किया।

दल और सत्ता की राजनीति से पूरा सन्यास लेकर नानाजी अपने रचनात्मक प्रयोगों में लीन थे कि दैवयोग से 23 जून 1980 को संजय गांधी की एक विमान दुर्घटना में अनायास मृत्यु हो गई। किसी सांसद ने लोक सभा में उस विमान दुर्घटना के पीछे नानाजी का षडयंत्र बता दिया। फिर क्या था, नानाजी अखबारों में छा गए। साक्षात्कार के लिए उनके यहां पत्रकारों की कतार लग गई। उस समय नानाजी ने अपना माथा ठोंक कर कहा, "कैसी विचित्र स्थिति है। जिस रचनात्मक काम में मैं अपना खून-पसीना बहा रहा हूँ, उसमें इन पत्रकारों की कोई रुचि नहीं और जिस घटना से मेरा दूर का संबंध नहीं, उसके लिए मेरा प्रचार कर रहे हैं।"

1983 अक्टूबर में नानाजी ने दिल्ली में एक अभिनव कार्यशाला आयोजित की जिसने देश भर में स्वप्रेरणा से विविध प्रकार के रचनात्मक कार्यों में लगे संघ-पृष्ठभूमि के कार्यकर्ताओं का पहली बार एकत्रीकरण किया गया। सरसंघचालक बालासाहेब देवरस से इस कार्यशाला का उद्घाटन कराया। जनप्रेरणा और जनसहभाग पर आधारित सर्वांगीण विकास के अनेक विध-प्रकल्पों की नानाजी की व्यवहारिक बुद्धि ने कल्पना की, उसकी विस्तृत योजना तैयार की, उसे साकार रूप देने के लिए मानवी एवं भौतिक साधन जुटाए और उसके क्रियान्वयन के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम खड़ी की। गोंडा जिले में विकास का नमूना खड़ा करने के साथ-साथ उनका मस्तिष्क देश के विभिन्न भागों में वहां की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नए-नए प्रकल्पों की रचना करने लगा। नागपुर शहर में निर्धन और पिछड़ी बस्तियों के बच्चों को विकास-प्रक्रिया का अंग बनाने के लिए उन्होंने 'बालजगत' के रूप में एक अद्भुत प्रकल्प खड़ा किया। वनवासियों की दृष्टि से बिहार के सिंहभूम व सुन्दरगढ़ जिलों में वनवासी प्रकल्पों का सूत्रपात किया। अहमदाबाद (गुजरात) में सेवानिवृत्त प्रौढ़ नागरिकों को समाज में पिछड़े एवं दुर्बल वर्गों की सेवा में प्रवृत्त करने के लिए 'वानप्रस्थ अभियान' आरंभ किया। पानी के अभाव से जूझते मराठवाड़ा क्षेत्र के बीड जिले में जल संचय, कृषि विकास एवं गुरुकुल आदि के प्रयोग आरंभ किए।

1990 में नानाजी को पवित्र तीर्थ चित्रकूट ने अपनी गोद में खींच लिया। वहां उन्होंने 'ग्रामोदय विश्वविद्यालय' की अभिनव योजना तैयार की, जिसमें शिशु अवस्था से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक की शिक्षा से निकले छात्र शहरों की ओर भागने के बजाए ग्राम्य-जीवन अपनाने के लिए प्रवृत्त हों। मध्य प्रदेश सरकार ने

बाल जगत, नागपुर में नानाजी अति पिछड़े बीड में नानाजी ने ही नौनिहालों के चेहरों पर मुस्कान बिखेरी